## III Semester B.Sc. Examination, November/December 2017
## (Fresh + Repeaters) (C.B.C.S.) (2016-17 and Onwards)
## HINDI LANGUAGE – III
## Natak, Sahityakaron-Ka-Parichay, Sankshepan

Time : 3 Hours Max. Marks : 70

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** शब्द या वाक्यांश में लिखिए । **(10×1=10)**

1) जीजी का नाम क्या था ?
2) जयन्त की मुलाकात साहनी साहब से कहाँ होती है ?
3) अप्पी की उम्र कितनी थी ?
4) मुख्यमंत्री के नौकरों की फ़ेहरिस्त में किसका नाम शामिल था ?
5) बिट्टी के साथ कौन आया था ?
6) सेठ की पोती का नाम लिखिए ।
7) शोभा किसकी पत्नी थी ?
8) ''बिना दीवारों के घर'' नाटक के नाटककार कौन हैं ?
9) शोभा को समारोह में गाने का निमंत्रण किसने दिया ?
10) अजित किस कंपनी में नौकरी के लिए अर्ज़ी भेजता है ?

SRI BHAGAWAN MAHAVEER JAIN COLLEGE KGF - 563 122

II. किन्हीं **दो** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए । **(2×7=14)**

1) ''लगता है, जैसे जितना-जितना ऊपर से बढ़ती जा रही हूँ भीतर से उतनी ही मेरी जड़ें कटती जा रही हैं, मैं अपनी धरती से उखड़ती जा रही हूँ ।''
2) ''जहाँ योग्यता नहीं, वहाँ तो प्रेशर डलवाना ही पड़ता है ।''
3) ''अपनी बनाई चीज़ को भी नहीं पहचानूँगा भला ।''

III. '''संदेह' एक लाइलाज बीमारी है । यदि यह एक बार मस्तिष्क में प्रवेश कर जाए, तो घर को मकान में बदलने में देर नहीं लगती ।''– 'बिना दीवारों के घर' नाटक के आधार पर उक्त कथन की समीक्षा कीजिए । **16**

**अथवा**

'बिना दीवारों के घर' नाटक का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश ड़ालिए ।

IV. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए । (2×5=10)

1) शोभा ।

2) अजित ।

3) जयन्त ।

V. किसी **एक** साहित्यकार का परिचय दीजिए । (1×10=10)

1) कृष्णा सोबती ।

2) मुक्तिबोध ।

VI. उचित शीर्षक देते हुए **एक तिहाई** शब्दों में संक्षेपण कीजिए । 10

लोकमान्य तिलक का कथन है– ''मैं नरक में भी पुस्तकों का स्वागत करूँगा, क्योंकि इनमें वह शक्ति है कि जहाँ वे होंगी, वहाँ अपने आप स्वर्ग बन जाएगा ।'' श्रेष्ठ पुस्तकें मनुष्य, समाज और राष्ट्र का मार्गदर्शन करती हैं । संसार के इतिहास पर दृष्टिपात करने पर हम देखते हैं कि संसार की अनेक महान विभूतियों पर किसी-न-किसी श्रेष्ठ पुस्तक का प्रभाव पड़ा ही है । महात्मा गाँधी, टालस्टॉय, अब्राहिम लिंकन-सभी के जीवन में श्रेष्ठ पुस्तकों का महत्वपूर्ण योगदान था । लेनन में क्रांति की भावना कार्ल मार्क्स के साहित्य को पढ़कर ही जागी थी । गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है क्योंकि उस काल में अत्यंत उत्कृष्ट पुस्तकों की रचना हुई । विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं क्योंकि पुस्तकों का हमारे विचारों पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ता है तथा पुस्तकों के विचार ही समाज की काया पलट कर देते हैं । श्रेष्ठ पुस्तके मनुष्य को पशु से देवता बनाती हैं । पुस्तकें ही मनुष्य की सात्विक वृत्तियों को जाग्रत करती हैं तथा उसे असत्य से सत्य की ओर, अधकार से प्रकाश की ओर ले जाती हैं ।

---

SRI BHAGAWAN MAHAVEER JAIN COLLEGE
KGF - 563 122